بسم اللہ الرحمن الرحیم

”شروع کرتا ہوں اللہ کے نام سے جو بڑا رحم کرنے والا مہربان ہے“

मआसिरुल बाक़िरिया

यानी सवानेह उमरी इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम

मोअल्लिफ़

मौलवी सै0 औलाद हैदर फ़ौक़ बिलगिरामी

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
अलहमदु लिल्लाहि रब्बिलि आ-लमीन व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम।

ख़ुदा का शुक्र है कि हमारा यह संकलन का सिलसिला जारी है और यह पाँचवां नम्बर बख़ैर व ख़ूबी पूरा हो गया।

आम तौर पर समझा जायेगा कि इस छोटे से अंक के तरतीब देने में कोई तकलीफ़ नहीं हुई होगी। हम यक़ीन दिलाने के लिए मौजूद हैं कि इस छोटे से काम में भी, जो मोटाई में केवल १०० पृष्ठों तक होगी, पूर चार महीने तमाम हो गए। इस लिए यदि हर महीने का औसत काम निकाला जाए तो मालूम होगा कि रात-दिन मेहनत करने के बाद, रोजाना का औसत काम पच्चीस पृष्ठ ही होंगे। इस से हमारे पढ़ने वालों को पूरा अनुमान जाएगा कि लेखों को तलाश करना, जमा करके, उन्हें तरतीब से लगाना इन सब कामों में कितनी कठिनाई का सामना हुआ होगा।
हमारे मौजूदा अंक, मआसिरे-वाक़रिया[अ०] में इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के हालात, ख़ैर व बरकत का उल्लेख करते हुए उनके सच्चे कथनो और विचारों पर आधारित उल्लेखनीय सामग्री एकत्रित कर दी गई है। इस सिलसिले को जारी रखा जायेगा, और दूसरे मासूमीन[अ०] के हालात को भी इसी तरह इन-शा-अल्लाह जमा किया जायेगा। हमारे इस संकलन-कार्य से यह बात तो खुलकर सामने आ जाएगी कि इस काम से कोई सांसारिक लाभ कमाने का इरादा तो पूरा होता दिखाई नही देता क्यों कि इन हस्तियों की अति दुनिया में मौजूदगी का उद्देश्य माली लाभ बढ़ाना या दुनियावी शोहरत (यश) प्राप्त करना नहीं था, बल्कि उनके उच्च्व व्यक्तित्व को दुनिया के सामने लाने और उनके, दैनिक जीवन को पढ़ने और पढ़ाने से इनसान का दिमाग़ उनके दैनिक, आचरण, उनके विचारों, उनके बताए हुए बहुमूल्य मार्ग दर्शन से पूरी तरह से लाभ उठा सकता है। बस यही

आशय है कि ऐसे सम्पूर्ण व्यक्तित्व की विशेषताओं, खूबियों और परोपकारी कार्यों को सामने लाया जाए जिनकी विचित्रताओं से हर इंसान परिचित हो जाए समझ में आजाता है। कि इस दुनिया में भी ऐसी पाक हस्तियाँ मौजूद हैं जिनसे अपार मुहब्बत (कुल ला-अस-अलुकुम अलैहि अजरन इल्लल मवद्-दता फ़िल-कुर्बा) से ज़ाहिर और जिनको अनुसरण (इताअत) का हुक्म (अतीउल्ललहा व अतीउर्रसूल व उलिल-अमरि-मिनकुम) से साबित है और वाजिब है। हमने इस किताब में बारह इमामों की इमामत के विषय में भी अहले सुन्नत के उलमा की विश्वसनीय हवालों से लेकर और उन्हें सलैक्ट करके एक अलग अध्याय में शामिल कर दिया है। फिर उसके बाद अपनी किताब में उस आवश्य सामग्री को जमा करके लिख दिया है। बहरहाल हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर के हालात को उनके जन्म से उनकी वफ़ात (मृत्यू) के दिन तक विस्तार से इस किताब में दर्ज कर दिया गया है, जिनमें वक़्त के बादशाहों को उनकी बाकमाल व्यक्तित्व से लाभ उठाने, या उनके लाभदायक विचारों तथा राय व सलाह के लाभ उठाने का उल्लेख मिलता है। अख़िर में हिशाम पुत्र अब्दुल मलिक की ओर से ज़ैद पुत्र हसन[अ०] के साथ की गई साज़िश उस दुश्मनी से भरी कार्रवाइयों का पूरी तरह से ज़िक्र (वर्णन) किया गया है। ऊपर के उल्लेखों पर आधारित हमारी यह किताब क़ौम और मिल्लत के बुज़ुर्गों की सेवा में प्रस्तुत है। उम्मीद की जाती है कि वे इन लेखो को पसन्द करेंगे और अपनी बहुमूल्य सहमति के साथ-साथ इस लेखक (मुअल्लिफ़) आशीर्वाद के दो शब्दों से याद करेंगे।

व आख़िरो-दअवाना अनिल-हम्दो लिल्लाहे रब्बिल-आ-लमीन वस्सलातु वस्सलामु अला मुहम्मद व आलिहित-तय्येबीनत-ताहिरीन।

लेखक

सैय्यद औलाद हैदर बिलगिरामी

तौरख क संगल उसे (अल मुअल्लिक) सैयद औलाद हैदर, बिलगिरागी,

बेकस (असहाय) हुसैन^अ० के मसायबः

इस, एक विषय में, विशेष रूप से अनगिनत किताबें लिखी जा चुकी हैं, या संकलित की जा चुकी हैं कि जिनको शुमार करना-असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। हम जिन पुस्तकों को आपके समक्ष पेश कर रहे हैं, उनमें कुछ विशेष बातें हैं। अर्थात जहां तक अविश्वसनीय और कमज़ोर हदीसों को इन किताबों में बिल्कुल भी शामिल नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त इसके मज़मून (विषय) दिल पर अत्याधिक प्रभाव डालते हैं। हुसैने-मज़लूम (पीड़ित) और दूसरे शोहदा-ए-करबला की शहादतों के हालात दिल दहलाने वाले और ऐसे ग़म से भरे लहजे मे दर्ज किए गए हैं, कि हर मोमिन के दिल से खून आंसू बन कर आंखों से बूंद बन कर टपकने लगते हैं। लिखाई, छपाई बहुत सुन्दर व स्पष्ठ है, और क़ीमत बहुत मुनासिब रखी गई है। यही कारण है कि इन किताबों की बेहद सराहना हो रही है।

लवाइजुल-एहज़ानः

इसमें चौदह मासूमीन^अ० की विलादत व वफ़ात का उल्लेख मिलते हैं। और हरेक मासूम^अ० के जीवन के थोड़े बहुत उल्लेख मिलते हैं। मासूमीन^अ० के बुजुर्गो के और उनकी औलादों के चमत्कार (मोजिज़े) विस्तार के साथ मिलते हैं। कुल मिला कर यह पुस्तक देखने योग्य है। पुराना मूल्य --और वर्तमान मूल्य ---है। (यह मूल्य पुरानी अरबी पुस्तक पर अंकित है, जो समझ में नहीं आई)

तज़्किरतुत्ताहिरीनः

इस किताब में मसाइब (कष्टों) का उल्लेख बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया है। इस किताब के पांच भाग हैं। हर भाग में बहुत रुला देने वाली और दिल दहला देने वाली रिवायतें (कथन) जमा की गई

हैं। पूरी किताब का मूल्य--- और मूल मूल्य---- है। (पुस्तक में पुरानी तरह से मूल्य अंकित है जो समझ में नहीं आ रहा है।)
(फिर वही पुरानी तरह से मूल्य अंकित किया गया है जो समझ में नही आ रहा है)

यनाबिउल-मसाइबः

इस किताब में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों के सच्चे हालात विस्तृत रूप से दर्ज हैं।

(मूल्य वही पुरानी तरह से मूल्य अंकित किया गया है जो समझ में नही आ रहा है)
पब्लिशर मैनेजर, जवाहर एड कम्पनी, दिल्ली

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहमदु लिल्लाहि रब्बिल आलिमीन वस्सलातु वस्सलामु अला नबिय्येही व अला आलिहित्तय्येबीनत्ताहिरीन

आपका नाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] कुन्नियत अबू जाफ़र और सबसे मशहूर लक़ब बाक़िर है। आपकी माताजी का नाम उम्मे अब्दुलाह पुत्री हसन[अ०] पुत्र अली[अ०] है अल्लामा सिब्ते इब्ने जौज़ी तज़करा खवासुल-अ-इम्मा में लिखते हैं कि आप को अबूजाफ़र-अल-बाक़िर[अ०] कहते हैं। आप है हज़रत अली इब्नुल हुसैन[अ०] के बेटे हैं। आप की माताजी का नाम उम्मे अब्दुल्लाह बिन्तुल हसन इब्ने अली[अ०] अलग है और यह बिल्कुल ग़लत है क्योंकि इमामे-हसन[अ०] के जीवनकाल में आपकी किसी भी औलाद की संतान होना इतिहास में नहीं मिलता है। हमारे बहुमूल्य शोधक को केवल शक हो गया इस लिए ख़्वाजा मुहमूद पारसा ''फ़सलुल-ख़िताब'' में लिखते हैं, उम्मे अब्दुल्लाह बिन्ते हसन इब्ने अली[अ०] उलेमा-ए-अहलेबैत[अ०] भी इसी से सहमत हैं कि आपकी माताजी का नाम फ़ातिमा बिन्तुल-हसन[अ०] था जिनकी कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह थी। [१]

यानी आप पहले तो अलवी हैं जो अलवियों से और हाशमियों से हैं। (तज़कि-रतुल-ख़्वासुल अइम्मा-फ़ज़्लुल ख़िताब-फुसूलुल मुहिम्मा) मुल्ला मुहम्मद बाक़िर मजलिसी भी जलालुलउयून पृष्ठः८४८ में भी ऐसे ही लिखते हैं कि अव्वल अलवी जो दो अलवियों से अव्वल हाश्मी जो दो हाशमियों से मैदा हुए हैं वो आप ही हैं। जनाबे यूसुफ़ अली नबीयेना व आलिही व अलैहिस्सलाम के नाम के साथ में लिखा जाता है।

टलकरीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम यूसुफ़ इब्ने (पुत्र) याक़ूब इब्ने इसहाक़ इब्ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम इसी के भांति इस मुहम्मद[स०अ०] के बेटे के लिए भी लिखा जाता है अल-इमाम इब्नुल

[1] जिलाउल उयून पृष्ठ :२४८

इमाम इब्नुल इमाम इब्नुल इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] इब्ने अली इब्नुल हुसैन इब्ने अली अलैहिमुस्सलाम हम ऊपर लिख चुके हैं कि आपका सबसे प्रसिद्ध उपनाम बाक़िर[अ०] है। अल्लामा सिब्ते इब्ने जौज़ी ने इस उपनाम से पुकारे जाने के दो कारण लिखे हैं- पहला यह कि (अरबी में) (बाक़िर का मतलब है खोलने वाला, फैलाव करने वाला) अल्लाह को सजदा करते करते आपका माथा बहुत बड़ा होगया था। और दूसरा कारण यह था कि आपसे बहुत अधिक ज्ञान मिला इस कारणवंश आपका उपनाम बाक़िर[अ०] हुआ। अपने इस उल्लेख के प्रमाण में मशहूर अल्लामा साहब, जिनका नाम है जौहरी जो शब्दकोष (इल्मे लुग़त) के ज्ञान में भरोसेमन्द व असरदार माने जाते हैं यह इबारत नक़्ल करते हैं। (अरबी)

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के उपनाम शाकिर (अल्लाह धन्यवाद करने वाला) और हादी (मार्ग दर्शक) भी हैं अल्लामा इब्ने हजर अपनी पुस्तक सवाइक़े मोहरिक़ा में लिखते हैं:

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] को इस कारण बाक़िर कहते हैं कि वह दीन व दुनिया के ज्ञान के ख़ज़ाने ज़ाहिर करते थे। आप ने ज्ञान के दीप जलाए। आप का सीना ज्ञान के प्रकाश से उज्जवल और व्यक्तित्व बहुत पवित्र व साफ़ था। आप हर समय अल्लाह की इबादत में रहते और आपके नेक विचारों ने बहुत शोहरत पाई। इस छोटी सी किताब में उनकी ख़ूबियों का वर्णन अत्यन्त कठिन है।

आपके जन्म से लेकर हिदायत की उम्र तक का हालः

तबक़ात के अनुसार आप का जन्म मदीने में, इमाम हुसैन की शहादत से पहले सन् ५७[हि०] में हुआ। उ-लमा-ए अहलेबैत[अ०] के अनुसार आप का जन्म ३ सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र को हुआ या फिर

रजब माहीने के आरम्भ में ५७[हि०] में हुआ। अधिकांश ने बाद वाली तारीख़ पर सहमति जताई है।

वाक़-ए-करबला के समय आपकी आयू चार साल से अधिक नहीं थी। ऐसा साबित है और आप करबला के बाद अपने पिता इमाम ज़ैनुल आबेदीन के साथ ही रहे। हमारे इमामों (अल्लाह के प्रतिनिधियों) को ज्ञान क़ुदरत की ओर से पहले से ही प्राप्त होता है इस कारण उन्हें किसी से शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यक्ता नहीं होती है। नबीयों में कोई भी ऐसा बी गुज़रा जिसने ज्ञान की अपनी विरासत अपने नाइबों तक पहुंचा न दी हो। यह विरासत किस को देनी है यह उनके अपने अधिकार में नहीं होती थी, बल्कि यह कार्य वह अल्लाह के आदेशानुसार देते थे। हज़रत मुहम्मद [स०अ०] और उनके अहलेबैत[अ०] के हालात को पढ़ें तो पता चलेगा कि आप ने किस प्रकार से इस ज़िम्मेदारी को पूरा किया और फिर यह कार्य बाद में भी किस ख़ूबी के साथ होता रहा हज़रत मुहम्मद [स०अ०] ने अपने उत्तराधिकारी हज़रत अली [अ०] को एकान्त में बैठा-बैठा कर गोपनीय वार्तालाप कीं। जब आप हज़रत अली [अ०] से गोपनीय वार्तालाप करते थे तो वहाँ पर उस समय उनती पत्नियों को भी आने की अनुमति नहीं होती थी। केवल ऐसी दो घटनाएं इस सम्बन्ध में पेश करते है ताकि बात लम्बी न हो जाए।

ख़ुवारिज़्मी जो अहले सुन्नत के बड़े आलिम हैं उम्मुल मोमिनीन जनाबं उम्मे सलमा[र०] की ज़बानी एक घटना (वाक़ए) का उल्लेख करते हैं कि उनका एक ग़ुलाम था जिसने उनका पालन पोषण किया था आयू उनके पिता के समान थी। वह हर नमाज़ के बाद के बाद हज़रत अली[अ०] को बुरा भला कहता था। जब उस से हज़रत उम्मे सलमा[रज़ि०] ने पूछा, कि बाबा! तुम ऐसा क्यों करते हो? तो उसने ह० उस्मान के क़त्ल में हज़रत अली[अ०] के शामिल होने की बात कही। हज़रत उम्मे सलमा[र०] जो हज़रत मुहम्मद[स०अ०] की कई दूसरी पत्नियों से ज़्यादी प्रेम करती थीं। उस ग़ुलाम से कहा कि में तुम्हें हज़रत मुहम्मद[स०अ०] का एक रहस्य बताती हूँ?

क्यों कि तुम ने मुझे मेरे पिता की तरह पाला है। उन्हों ने बताया कि हज़रत मुहम्मद[स०अ०] हज़रत अली[अ०] से कई कई घण्टे राज़ की बातें किया करते थे, और एक दिन जब हज़रत मुहम्मद[स०अ०] की मेरे साथ रहने की बारी थी। तो आप हज़रत अली[अ०] का अपने साथ लिए हुए घर में आए और उन्हें घर के अन्दर के हिस्से में ले गए और मुझ से कहा कि मैं अन्दर न आऊँ! जब बहुत देर हो गई दोपहर का समय हो गया तो मैने सलाम करके अन्दर जान की इजाज़त माँगी, मगर हज़रत मुहम्मद[स०अ०] ने इनकार कर दिया। यहां तक कि बहुत देर हो गई और मग़रिब का समय आ गया। मैंने सलाम करके फिर पूछा तो इजाज़त मिल गई मगर मैंने हज़रत हज़रत मुहम्मद[स०अ०] को हज़रत अली[अ०] के कान में कुछ बातें करते हुए पाया। मैंने इतना बड़ा दिन कभी न देखा था कि हज़रत अली[अ०] इतनी देर तक आपकी बातें सुन रहे थे। अन्त में हज़रत अली[अ०] ने अपने कान हटाए और मेरी ओर देखे बिना ही हज़रत मुहम्मद[स०अ०] से यह कहते हुए चले गए कि जी हज़रत मैं ऐसा ही करुंगा। मुझ से हज़रत ने बड़ी नर्मी से कहा, उम्मे सलमा! पूछोगी नहीं, यह क्या हुआ? फिर मुझ से कहने लगे, जिब्राईले-अमीन आए थे और मेरी दाईं तरफ़ बैठे थे जब कि अली[अ०] मेरे बाईं तरफ़ बैठे हुए थे। मैं हज़रत अली[अ०] को जिब्राईल के बताए हुए वह हालात बता रहा था, जो मेरे दुनिया से जाने के बाद, क़यामत तक पेश आने वाले थे। ऐ उम्मे सलमा हर एक उम्मत में ख़ुदा ने एक नबी भेजा है और उस नबी के बाद उसका एक वसी भेजा है, मेरे बाद मेरे अहलेबैत[अ०] में हज़रत अली[अ०] को मेरा वसी बना कर भेजा है। यह सब वही विशेष वार्तालाप थी जो अपने विशष दायरे में रहकर एक ख़ास नबी अपने बाद वाले अपने उत्तराधिकारी (जानशीन) को बताया करता है। इसके अतिरिक्त किसी को आज्ञा नहीं होती कि यह जानकारी उसके साथ ले सके। किसी दूसरे को अल्लाह ने उन रहस्यमयी बातों के समझने की योग्यता ही नहीं दी है। इस वाक़ए से साफ़-साफ़ पता चलता है कि हज़रत जिब्राईल

द्वारा लाया गया सन्देश इस सावधानी के साथ पहुंचाया गया कि किसी को कानोकान भी पता न चल सके। यहां तक कि अपनी निकटतम यानी अपनी बीवी को भी नहीं ज्ञात हो सके। इस से यह भी समझ आया कि इन सब बातों की गोपनीयता कितनी आवश्यक थी। जिसके लिए एकांत में रहने का इतना ध्यान रखा गया। यह तो घर के अन्दर की बात थी, अब ज़रा बाहर के हालात भी पेश करते हैं, ताइफ़ (सऊदी अरब में मक्के के पास एक शहर) की लड़ाई के मौक़े पर भी राज़दारी का ऐसा वाक़ेआ हुआ, जो आम तौर पर तारीख़ और हदीस की किताबों में दर्ज है। हम उसको सहीह तिरमिज़ी और निसाई (अहले सुन्नत की दो किताबें) के लेखों में देखते हैं। जाबिर[रज़ि०] से नक़्ल किया जाता है कि ताइफ़ की लड़ाई के दिन हज़रत मुहम्मद[स०अ०] ने हज़रत अली[अ०] को कुछ बताने के लिए पास बुलाया। लोगों ने कहा कि हज़रत अली[अ०] से हज़रत[स०अ०] राज़ की बातें बहुत करने लगे हैं। हज़रत कहने लगे यह इनसे मैने बात नहीं की बल्कि ख़ुदा ने की है। यहाँ पर तिरमिज़ी के लेखक कहता है कि इसका अर्थ यह हुआ कि ख़ुदा ने हज़रत अली[अ०] इस वाक़ए से मालूम हुआ कि एकांत के अतिरिक्त भी सफ़र और लड़ाई में घमासान में ऐसी तन्हाई के इन्तिज़ाम करने पड़ते थे, जहां राज़ की बात समझाई जाती थी और इस में बहुत ही एहतियात से काम लिया जाता था। इस पर भी जलने वाले और आपत्ति जताने वाले दिमाग़ ऐसे थे कि वह इन मामलों को भी हज़रत के स्वार्थ के रूप में देखते थे। भूल जाते थे, कि आप तो अल्लाह के आदेश (वही) से हटकर कोई बात करते ही न थे। इब्ने मरविया से रिवायत है कि जब आप इन आरोपों से तंग आ गए तो सब (असहाब) को जमा करके सख़्ती से ऐसी बातें करने को मना करते थे। आपने कहा कि जिसने हज़रत अली[अ०] से हसद (जलन) की बातें कीं उसने मुझसे ऐसी बातें कीं यानी हसद किया और जिसने मुझ से हसद किया उसने अल्लाह से हसद किया। मालूम हुआ कि ऐसे मामलों की तालीम

के लिए किसी ख़ास जगह या किसी किसी ख़ास समय की आवश्यकता नहीं होती थी। बल्कि जब और जहां अल्लाह को आवश्यक्ता लगी उसने अपने रसूल[स०अ०] को आदेश दिया और वह अल्लाह के आदेशो का पालन करते रहे। देखने से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद[स०अ०] ने ताइफ़ के युद्ध की गहमागहमी का भी ख़्याल नहीं किया और अल्लाह के आदेश पर उसी तरह से अमल किया जैसे मदीने में करते थे। शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी ने इस पूरे वाक़ए का वर्णन किया है और फ़ारसी की पंक्ति लिख गए हैं- जिल्का अर्थ यह है कि इस सभा में ग़ैरों के लिए कोई जगह नहीं है।

मगर बड़ा दुःख है, कि मुसलमानो की सोच और उनके विचार कैसे है कि हज़रत मुहम्मद[स०अ०] के बार-बार बताने पर भी कि अली[अ०] से दुश्मनी कुफ़्र है फिर भी हसद करने वालो ने अली[अ०] है हसद हसद और दुश्मनी करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। बनी उमइया के बादशाहों के काल में इस विचार को शक्ति मिल गई थी इसी लिए लगभग सभी मुसलमान इसी विचार धारा के हो गए थे, यानी दुश्मनाने- अहलेबैत हो गए। धीरे धीरे यहां तक हो गया कि अली मुर्तजा[अ०] के व्यक्तित्व पर तरह-तरह के इल्जाम, तोहमतें, झूठी अफ़वाहें फैलाई जाने लगीं। हम उनमे से कुछ को लिख रहे हैं। जिन्हें हमने सिराजुम्मुबीन के पहले, दूसरे व तीसरे संस्करण में लिख दिया है। उसमें से केवल एक वाक़आ यहाँ भी लिख रहे हैंः मुहम्मद इब्ने मुस्लिम उल्लेख करते हैं कि उन्होंने एक दिन सईद इब्ने मुसय्यब के साथ हज़रत मुहम्मद[स०अ०] के रौज़े (क़ब्र) पर उपस्थित हुआ और वहां देख के एक वक्ता मंच (मिम्बर) से कह रहा है कि हज़रत मुहम्मद[स०अ०] हज़रत अली[अ०] को अपने निकट प्रेम व मुहब्बत की वजह से नहीं किया था बल्कि (मआज़ल्लाह) उनके शर से बचने के लिए किया था। इस पर सईद इब्ने मसैयब जो हज़रत मुहम्मद[स०अ०] के बाद आने वाले भले लोगों (ख़ैरुत्ताबेईन) में से थे, अपने स्थान से उठकर वक्ता के पास से उसे बुरा कहते

हुए (लानत भेजते हुए) गए और उस के मुंह पर अपना कपड़ा डाल दिया ताकि उसे कोई देख न सकें और बोले तू उस (ख़ुदा का मुनकिर हो गया यानी काफ़िर हो गया! जिसने तुझे मिट्टी से और इनसानी नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया और तुझे पुरुष की शक्ल में पैदा किया। जब वहां मौजूद लोगों ने (सईद विन मसैयब) से कहा कि आप को क्या हुआ है? यह वक्ता बनू उमैया का है उन्होंने - कहा, यह क्या कर रहा था? मैंने सुना नहीं, हाँ मैने कब्रे-हज़रत मुहम्मद[स०अ०] से आवाज जरूर सुनीः
कि ख़ुदा की पनाह! किसी की शान इतनी भी घटाई जाती है? किसी के व्यक्तित्व व मक़ाम को इतना भी गिराया जाता है?
वह भी कौन! जिसकी प्रशंसाओं व दर्जों की ऊंचाई के बारे में हमने हज़रत मुहम्मद[स०अ०] से एक बार नहीं बार बार सुना था। और उसके बाद भी बड़े बड़े सहाबा से भी सुनते आए थे मगर बुरा हो इस जल्द यह सब भुला देने वालों का और पत्थर पड़ें दुनिया की लालच और ग़द्दार की मानसिक्ता पर जिसने हज़रत अली[अ०] को इतनी दुश्मनी और उनके ख़िलाफ़ इतना दुष्प्रचार करके अपनी हुकूमत बनाई और यह सब सौ वर्षों तक चलता रहा हम समझते हैं कि जो बातें हमने विस्तार से बताई हैं आपको लगेगा कि हमारा लेख लम्बा हो गया है मगर हमने जिस विचार से यह लेखनी उठाई है उसका उद्देश्य यह है कि एक विशेष वर्ग को यह बताया जाए कि हज़रत अली[अ०] का व्यक्तित्व कैसा था! डनका ज्ञान कितने ऊंचे शिखर पर था। यह सम्भव ही नहीं हो सकता था। जब तक पूरे हालात अध्ययन न किया जाए जो कैसे समझ में आयेगा? कैसा अफ़रातफ़री का माहौल हावी आचुका था। अब इस माहौल को पूरी तरह समझने के लिए यहां लम्बी भूमिका का अध्ययन करना आवश्यक था। अब इस तरह के माहौल में जहां प्रोपैगण्डा ऐसा उल्टा हो चुका हो ग़लत अफ़वाहें फैलाई जाती रही हों और फैल गई हों वहां इस प्रकार के ज्ञान का प्रचार करना जो हज़रत मुहम्मद[स०अ०] द्वारा जो इन पवित्र हस्तियों को मिली हों

जिनका केंद्र हज़रत अली[अ०] की ज़ात थी उस ज्ञान को लोगों तक पहुंचाना कितना कठिन कार्य था यह हमारे पाठकों को पूरी तरह समझ में आगया होगा। इस किताब के माध्यम से उन भेदों को पाठकों तक पहुंचाने की एक कोशिश की जाती है जो अल्लाह की उन ख़ास हस्तियों के माध्यम से हम तक पहुंचे है जो उसके योग्य थे उनके अतिरिक्त कोई दूसरा इस काम को नहीं कर सकता था इसी लिए हमारी पूरी कोशिश यही है कि बताएं कि किस प्रकार से हज़रत मुहम्मद[स०अ०] के पहुंचाए हुए संदेश और ज्ञान को एक विशेष वर्ग के लोगों ने किस प्रकार जनता तक पहुंचाया। हज़रत मुहम्मद[स०अ०] ने इसलाम के बाद जो ज़िम्मेदारी हज़रत अली[अ०] को सौंपी गई थी, उसे एक के बाद दूसरे को किस तरह सौंपा जाता रहा और उसे भलिभांति कैसे पूरा किया जाता रहा। हज़रत मुहम्मद[स०अ०] के बाद हरज़रत अली[अ०] और उनके बाद उनके उत्तराधिकारी फिर उनके उत्तराधिकारी इसी प्रकार यह सिलसिलेवार उत्तराधिकारी किस प्रकार एक दूसरे तक पहुंचाते रहे। मनोनीत किए जाते रहे और अपने दायित्व को निभात रहे। वास्तव में, हमारा उद्देश्य इन मामलात को पहुंचा है कि हज़रत मुहम्मद[स०अ०] के कहने के अनुसार हम तक इलाही सन्देश कुरैश या बनी हाशिम के द्वारा ही हम तक पहुंचाए जाते रहे जो हमारे बारह इमाम हैं। वास्तव में हमें अपने इमामों का परिचय देना था मगर इस सिलसिले को दूसरे प्रसंग में भी जोड़कर देखा जाने लगा वह प्रसंग मज़हबी बहसों, मुनाज़रों से जुड़ जाता है। इस लेख में उन प्रसंगों को जोड़ना उचित नहीं है। इस विचार से इस इमामत की बहस को अलग रखते हुए उन विशेष हदीसों को भी शामिल करेंगे जो इस वर्ग में इमामत के मसअले को समझने के लिए ज़रुरी है। हदीस क़ौले हज़रत मुहम्मद[स०अ०] को कहेंगे जो क़ुरान के अतिरिक्त उनकी ज़बान से निकले हों परन्तु वे क़रआनी सन्देशों के मुताबिक़ होते हैं।

बारह इमामो की इमामतः

हज़रत मुहम्मद[स०अ०] ने फ़रमाया कि उनके बाद उनके बारह ख़लीफ़ा (अत्तराधिकारी) होंगे जारी (मु-तवातिर) हदीस है। जिसको बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, निसाई और अबूदाऊद इत्यादि में यहां तक कि इसका उल्लेख प्रत्येक वर्ग के मुहद्दिसों द्वारा अलग-अलग तरीक़ों से किया गया था। बारह की संख्या में किसी को भी भेद नहीं है। लेकिन इन बारहों के नामकरण और उनके निर्धारण में कुछ को असहमति अवश्य है। वह कुछ इल्मे कलाम देखने वालों को भली-भांति ज्ञात हैं। कोई किसी को बतलाता है तो कोई किसी को, कोई किसी ख़ान्दान को मानता है कोई किसी को। इससे भी अधिक मज़ेदार बात यह है कि एक भी श्रृंखला को पूरी तरह से नहीं लिया गया है। एक सिलसिले से चार और एक घराने से आठ लेकर बारह की तादाद पूरी की जाती है। एक कुर्सी है और एक परिवार से आठ से बारह की संख्या पूरी हो जाती है। और फिर उनमें से कई लोग अब्दुल्ला इब्न जुबैर से बाहरी लोगों की इमामत पर ज़ोर देते रहते हैं। जब्कि मुल्ला अली क़ारी शरहे मिश्कात शरहे फिक़्हे अकबर अपने बारह इमामों के यह नाम उल्लेख करते हैं। चार ख़लीफ़ा १. अबूबक्र, २. उमर, ३. उसमान, ४. हज़रत अली[अ०], ५. मुआविया और उसका बेटा ६. यज़ीद, ७. अब्दुल मलिक इब्ने मरवान और उसके चार बेटे ८. वलीद, ९. सुलैमान, १०. हश्शाम और ११. यज़ीद और १२. उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़। हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी अपनी किताब फ़तहुलबारी शरहे सहीह-उल- बुख़ारी में और इमाम जलालुद्दीन स्यूती तारीख़ुल ख़लफ़ा में बारह इमाम इस तरह गिनवाते हैं:

हाफिज़ इब्ने हजर असक़लानी ने शरहे सहीह अल-बुख़ारी में काजी अयाज़ के शब्दों को उल्लेख किया है कि इस हदीस के बारे में जाना जाता है और जिसके समर्थन में अक्सर सहीह अल-तरीक़ हदीसें भी पाई जाती हैं। तात्पर्य यह है कि लोगों का एकत्र होना और निष्ठा की घोषणा होना। यानी कुछ लोगों ने जमा होकर

ख़िलाफत के लिए अबूबक्र को नियुक्त किया, फिर उमर को, फिर उसमान को, फिर हज़रत अली[अ०] को उस समय तक जब तक कि वाक़ए हकीमैन न हुआ और फिर वाक़ए तहकीम के समय से मुआविया को ख़िलाफ़त के लिए चुना गया किन्तु इस पर इजमा (सर्वसम्मति) जब हुआ जब मुआविया ने इमामे हसन[अ०] से शांति की सभा का आयोजन किया और इमामे हसन[अ०] की शर्तों पर सुलह की। इसके बाद उसके पुत्र यज़ीद को ख़लीफ़ा चुना परन्तु यह दुनियावी ख़िलाफ़त इमामे हुसैन[अ०] तक न पहुंच पाई। और आपको यज़ीद की ख़िलाफ़त में ही यज़ीद के हुक्म से करबला की भूमि पर उनके घर वालों बेटों, भतीजों, भांजों, मित्रों, रिश्तेदारों को तीन दिन का भूका प्यासा क़त्ल कर दिया गया। और उसके बाद भी यज़ीदी सेना बचे हुए बच्चों और औरतों पर अत्याचार करती रही। किन्तु जब यज़ीद वासिले जहन्नुम हो गया तो इख़्तेलाफ़ यहां तक कि अब्दुल मलिक इब्ने मारवान पर जनता की सहमति हुई। मगर ज़ुबैर के पुत्र के बाद फिर अब्दुल मलिक के चारों बेटों पर इस तरह सहमति बनी कि पहले वलीद, फिर सुलैमान, फिर यज़ीद फिर हश्शाम, पर सुलैमान और यज़ीद की बीच दुश्मनी हो गई। फिर उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ उसकी बाद बारहवां ख़लीफ़ा वलीद हुआ।